डॉ. अनुपमा तिवारी

जन्म :

मोरजापुर, उत्तर प्रदेश

शिक्षा :

एम.ए., एम.फिल., पी-एच.डी., नेट, स्लेट परीक्षा उत्तीर्ण

पी-एच.डी.-शोध प्रबंध :

मेहरुन्निसा परवेज की कहानियाँ : सामाजिक यथार्थ और कथाभाषा

एम.फिल-शोध प्रबंध :

डॉ. विवेकीराय कृत 'चली फगुनहटे बौरे आम' : लोकतत्व

लेख :

50 लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

संपादन :

धारा और धारणा (अर्द्ध-वार्षिक पत्रिका)

संपर्क :

3-34/12, फॉर्चून रॉयल रेजीडेंसी, 304, पी.एम.पालम., विशाखापट्टणम, (आन्ध्र प्रदेश)।

मोबाइल नं. : 08142623426

माया प्रकाशन

(पुस्तक प्रकाशक एवं विक्रेता)

6A/540, II-फ्लोर आवास विकास हंसपुरम्

नौबस्ता, कानपुर-208021

मो० : 07618879266, 09451877266

E-mail : mayaprakashankanpur@gmail.com

ISBN 978-93-87941-21-2

9 789387 941212 >

₹625/-

प्रवासी हिन्दी साहित्य बदलते तेवर

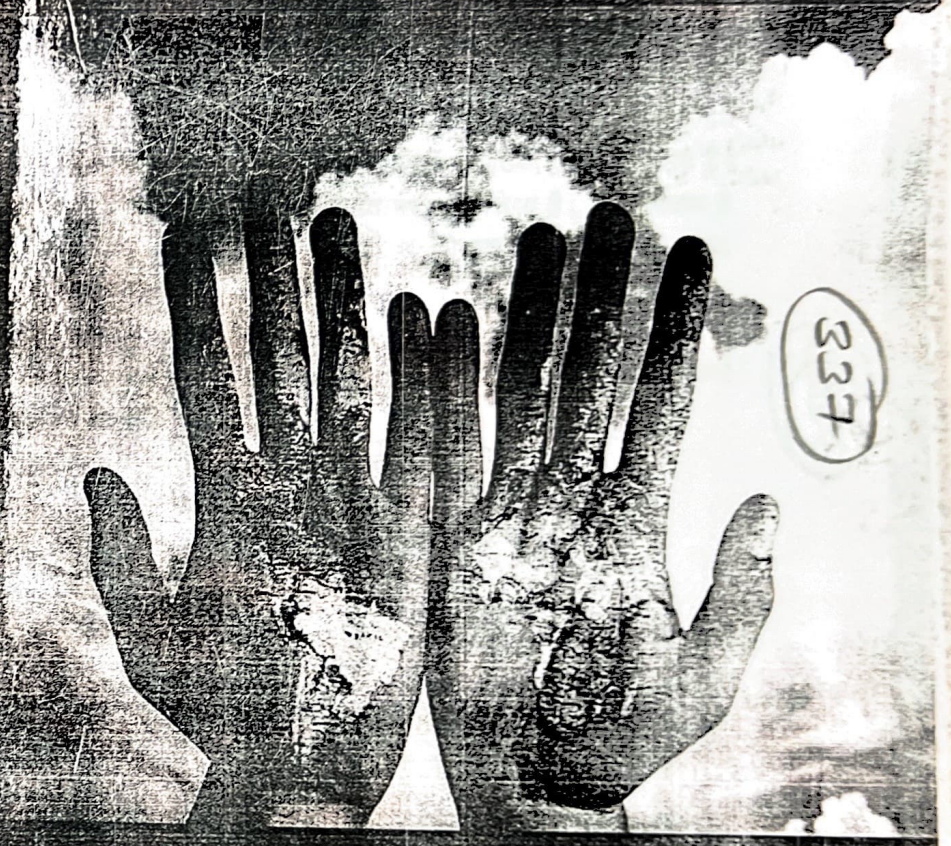

संपादक : डॉ. अनुपमा तिवारी

प्रवासी हिन्दी साहित्य : बदलते तेवर

328

संपादक
डॉ. अनुपमा तिवारी

माया प्रकाशन
कानपुर-208021

ISBN : 978-93-87941-21-2

पुस्तक	:	प्रवासी हिन्दी साहित्य : बदलते तेवर
संपादक	:	डॉ. अनुपमा तिवारी
स्वत्वाधिकार	:	संपादक
प्रकाशक	:	माया प्रकाशन 6A/540, आवास विकास हंसपुरम् कानपुर-208 021 Mo. : 9451877266, 7618879266, 6393609403
E- mail	:	mayaprakashankanpur@gmail.com
संस्करण	:	प्रथम 2018
मूल्य	:	625.00
शब्द सज्जा	:	विष्णु ग्राफिक्स नौबस्ता, कानपुर
मुद्रक	:	ट्राइडेन्ट प्रेस, दिल्ली

Prawasi Hindi Sahitya : Badalte Tewar

Editted By : Dr. Anupma Tiwari

Price : Rs. Six Hundred Twenty Five Only.

अनुशंसा

डॉ. अनुपमा तिवारी के संपादन में एक समीक्षात्मक ग्रंथ "प्रवासी हिन्दी साहित्य : बदलते तेवर" माया प्रकाशन, कानपुर से प्रकाशित होने जा रहा है। पिछले दो दशकों में प्रवासी साहित्य में महत्त्वपूर्ण लेखन हो रहा है। ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, यूरोप एवं खाड़ी देशों में कुछ उल्लेखनीय उपन्यास, कहानी–संग्रह एवं कविता–संकलन पाठकों के सामने आये हैं।

मुझे अनुपमा की काबिलियत पर पूरा भरोसा है। मेरा विश्वास है कि उनका यह प्रयास प्रवासी साहित्य को समझने में सहायक सिद्ध होगा।

लंदन
(२१ अक्टूबर, २०१८)

तेजेन्द्र शर्मा

339

हिन्दी प्रवासी साहित्य में रचनात्मक साहित्य की बहुलता है और आलोचना पक्ष न के समान है। रचनात्मक साहित्य मूलतः कथा प्रधान साहित्य है। लघुकथा, कहानी, उपन्यास विधा पर अधिकतर लेखकों ने लिखा है, कविता पर भी कवियों ने अपनी भावनाएँ बिखेरी हैं। निबंध, आलोचना जीवनी संस्मरण, गद्य–काव्य, आत्मकथा आदि विधायें बहुत कम लिखी गई हैं। कथा साहित्य और कविता में जो विषय वस्तु लेखकों द्वारा लिया गया है, वह प्रवासी साहित्य के नये तेवर को प्रस्तुत करता है। स्त्री विमर्श के संदर्भ में जहाँ भारतीय लेखिकायें अपने कथा साहित्य में स्त्री की समस्याओं, संघर्ष और उनके त्रासदीपूर्ण जीवन से पाठकों का परिचय कराती हैं, वहीं प्रवासी कथाकारों ने समस्याओं के साथ–साथ, समाधान भी प्रस्तुत किये हैं। ये समाधान स्त्रियों के लिए अनुकरणीय और प्रेरणास्पद हैं। अमेरिका की अनिल प्रभा कुमार/बस पाँच मिनट, सुदर्शन प्रियदर्शिनी/क्वाँरी बहू, रमणिका गुप्ता द्वारा संपादित/हाशिए उलांघती औरतः प्रवासी कहानियाँ आदि में स्त्री के आक्रोश के उद्‌भुत उदाहरण प्रस्तुत हैं। साथ ही इन साहित्यकारों ने दो भिन्न संस्कृतियों को तुलनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत किया है। इन लेखकों ने जिस तेवर में अपने पात्रों का चयन कर उनके परिसंवाद को प्रस्तुत किया है उनमें काल्पनिकता कम और यथार्थ अधिक है। आज के प्रवासी साहित्य में वर्ग, चरित्र, कथावस्तु इतने परिवर्तित हो चुके हैं कि अब यह मात्र गिरमिटियों या नौसटेल्जिया का साहित्य नहीं है। हिन्दी साहित्य के क्षितिज में प्रवासी साहित्य नवीन दृष्टिकोण और उद्‌देश्य के साथ उदित हुआ है। भूमण्डलीकरण के इस दौर में प्रवासी साहित्य की नितांत आवश्यकता है। आज प्रवासी साहित्यकार अपनी रचनाधर्मिता से दो भिन्न संस्कृतियों को निकट कर समन्वयवादी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित कर रहे हैं। विश्व को ग्लोबल गाँव बनाने का जो स्वप्न साकार किया जा रहा है उसमें प्रवासी साहित्यकारों की भूमिका अद्वितीय है। प्रवासी साहित्य ने हिंदी साहित्य को वैश्विक स्वरूप दिया है। एक नया साहित्यिक संसार नई विचारधारा और संवेदना, जीवन दृष्टि प्रवासी साहित्यकारों ने प्रस्तुत कर हिन्दी भाषा और साहित्य को समृद्ध किया है। इन समस्त पक्षों को ध्यान में रखते हुए प्रवासी हिन्दी साहित्य : बदलते तेवर पुस्तक की सामग्री प्रवासी साहित्य, साहित्यकारों तथा संस्कृति से संबंधित विषयों की जानकारी सुधी जन के लिए उपयोगी होगी, ऐसा विश्वास रखती हूँ। प्रवासी साहित्य के विकास से हिन्दी साहित्य का भी विकास होगा क्योंकि हिन्दी भाषा भी प्रवासी साहित्य से स्थानीय प्रयोगों और सांस्कृतिक संदर्भगत प्रयुक्तियों से सुसंपन्न होती है।

डॉ. अनुपमा तिवारी
शोधोत्तर अध्येता, हिन्दी विभाग
आन्ध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्टनम् आन्ध्रप्रदेश

अनुक्रम

अमरीकी हिन्दी कविता में नारीवाद 11 - 40
अजंना संधीर

अमेरिका की कवयित्रियों की मनोभूमि 41 - 46
अनीता कपूर

अभिमन्यु अनत कृत ज्वाराभाटा कहानी और मॉरीशस 47 - 50
अलका धनपत

प्रवासी हिंदी लेखन की पृष्ठ भूमि 51 - 56
अशोक कुमार

नीले पानी के देश में कविता के रंग 57 - 60
अनुपमा तिवारी

हिन्दी की प्रवासी जीवन पर पहली कहानी प्रेमचंद की 'शूद्रा' 61 - 63
कमल किशोर गोयनका

प्रवासी भारतीय लेखकों का हिन्दी स्थापित करने के सफर में योगदान 64 - 70
देवी नागरानी

हिंदी के प्रवासी कवि और उनकी कविताएँ 71 - 80
नवीन नन्दवाना

सुनीता जैन का हिंदी कहानी साहित्य में योगदान 81 - 86
प्रविण अनंतराव शिंदे

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के विकास में प्रवासी भारतीयों की भूमिका 87 - 90
भुवनेश्वरी तिवारी

प्रवासी साहित्यकार राजेन्द्र अरुण के ललित साहित्य में रामकथा का व्यावहारिक पक्ष 91 - 96
अनुपमा तिवारी

प्रवासी कथा साहित्य में स्त्री जीवन की अंतर कथा 97 - 103
एम वेंकटेश्वर

प्रवासी जीवन की विसंगतियाँ : अतिशय आर्थिक उन्मुक्तता 104 - 109
प्रानू शुक्ला

हिन्दी प्रवासी साहित्य दिशा और दशा 110 - 114
रणजीत कुमार सिन्हा

मॉरीशस के हिन्दी साहित्य का परिदृश्य 115 - 125
रामदेव धुरंधर

विष्णु प्रभाकर के यात्रा वृत्तांतों के आइने में चेक गणराज्य में हिन्दी एवं हिन्दी समाज 126 - 132
रामायण प्रसाद विश्वकर्मा

दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के भारतीय प्रवासियों में देशज सांस्कृतिक मूल्य 133 - 140
रिंन्जु राय

प्रवासी कवयित्रियों में भारतीय संस्कृति का संबल 141 - 145
अनुपमा तिवारी

सुषम बेदी के उपन्यास में प्रवासी मन 146 - 151
सतीश पाण्डेय

विदेशों में हिन्दी साहित्य : सृजनात्मकता के विविध आयाम 152 - 159
संदीप रणभिरकर

नीले पानी का देश और हिन्दी 160 - 164
सन्त लाल

सांस्कृतिक अंत:चेतना की आधारशिला : प्रवासी हिंदी कथा साहित्य 165 - 172
एस. कृष्ण बाबु

फीजी में हिंदी की समृद्धि में महापुरुषों का अतुलनीय योगदान 173 - 179
सुभाषिनी लता कुमार फीजी

काव्य रसों का कोलॉज बनाती अमेरिका की कविता 180 - 188
सुधा ओम ढींगरा

सुधा ओम ढींगरा - समकालीन प्रवासी लेखकों से बहुत अलग, बहुत विशिष्ट 189 - 207
पंकज सुबीर

341

विश्व मंच पर नव पीढ़ी को सर्व भाषाओं को सर्व भाषाओं की दिशा में विकसित होता देखकर यह महसूस होता है, कि हर युग में, हर मोड़ पर भाषा का विकास देखकर लगता है जैसे रविंद्रनाथ टैगोर का एक शांतिनिकेतन स्थापित हो रहा है, विश्वास सा बंधता चला जा रहा है की देश हमसे दूर नहीं है, जहाँ जहाँ इस तरह की संस्कृति पनपती रहेगी वहीं वहीं हिंदुस्तान का दिल धड़कता रहेगा और उसकी सुगन्ध हर और फैलेगी और महकेगी–

रहती महक है इसमें, मिट्टी की सौंधी सौंधी
मेरे वतन की खुशबू, केसर लुटा रही है।

– देवी नागरानी
न्यूजर्सी
e-mail : dnagrani @gmial.com

●

8

हिंदी के प्रवासी कवि और उनकी कविताएँ

नवीन नन्दवाना

हिंदी का प्रवासी साहित्य इन दिनों काफी चर्चा का विषय है। देश से बाहर गए कई प्रवासी रचनाकार इस दिशा में निरंतर लेखन कर इस साहित्य की श्रीवृद्धि में अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं। अमेरिका, कनाडा, चीन, ब्रिटेन, नीदरलैंड, मॉरीशस आदि देशों में निवासरत भारतीय अपने साथ अपना देश, अपनी संस्कृति और अपनी भाषा भी ले गए। वे विदेश की धरती पर निवासरत हैं किंतु उनके हृदय में भारत की धड़कन भी धड़कती है, जो अपनी सभी संवेदनाओं को हिंदी में ही बखूबी बयाँ कर पाती है।

प्रवासी साहित्य के रचनाकार विदेशी जमीं पर रहते हुए हिंदी साहित्य की वैभव में वृद्धि के लिए निरन्तर रूप से अपनी लेखनी को सक्रियता प्रदान किए हैं। साहित्य की विविध विधाओं को आधार बनाकर निरंतर वे भारतीय संस्कृति, मानव–मूल्यों और विविध समसामयिक परिस्थितियों में आ रहे बदलाव को अपनी कलम का विषय बना रहे हैं। वे दुनिया के विविध देशों में भारतीयता का प्रचार–प्रसार कर रहे हैं। वे इस प्रकार अपनी भाषा और अपनी संस्कृति के वाहक और वर्द्धक का कार्य भी कर रहे हैं।

गर्भनाल के 21वें अंक में प्रकाशित श्री कमल किशोर गोयनका से डा. सुधा ओम ढींगरा की बातचीत पर प्रतिक्रिया गर्भनाल के 24वें अंक में कमल किशोर का कहना है– "प्रवासी साहित्य हिन्दी का साहित्य है जिसका रंग–रूप, उसकी चेतना और संवेदना भारत के हिंदी पाठकों के लिए नई वस्तु है, एक नए भाव–बोध का साहित्य है, एक नई व्याकुलता और बेचैनी का साहित्य है जो हिंदी साहित्य को अपनी मौलिकता एवं नए साहित्य संसार से समृद्ध करता है। इस प्रवासी साहित्य की बुनियाद भारत–प्रेम तथा स्वदेश–परदेश के द्वंद्व पर टिकी है।"

विदेशी जमीं पर रहने वाले भारतीय रचनाकारों में कवियों की एक बड़ी संख्या है। उनकी कविताओं में आज भी हम भारत की महक महसूस कर सकते हैं। अमेरिका की धरती पर निवासरत रचनाकारों की बात करें तो पाते हैं कि कई